॥ श्रावणशृङ्गार ॥

अर्थात् ।

जिस में झूलन, मलार और अनेक धुन की चोटीली २ नवीन कजलियां और सावनी रसिकों के आनन्द देनेवाली, अपने परमोदार कायस्थकुलदिनेश सूर्यपुराधिपति श्रीमान् राजा राजराजेश्वरी प्रसादसिंह तथा (प्यारे) जू के चित्त विनोदार्थ

मारकंडे कवि कोपागञ्जनिवासी ने स्वयम् निर्माण करके मुद्रित कराया ।

बनारस ।

भारतजीवन यन्त्रालय ।

1903

द्वितीय बार] [मूल्य प्रति पुस्तक ।)